जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, मंगलवार, 24 जनवरी, 2017

गन्ना की किस्मों को विकसित करने पर हुई चर्चा

लखनऊ। क्षेत्रीय गन्ना प्रजनक सम्मेलन का आयोजन सोमवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन गन्ना आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में गन्ना आयुक्त ने कहा कि वर्ष 2030 तक 35 मिलियन टन चीनी की आवश्यकता होगी, जिसको पूरा करने के लिए 100.110 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उपज तथा 10.75 प्रतिशत चीनी परता का लक्ष्य प्राप्त करना होगा। इसके लिए उन्नत किस्मों का तेजी से विकास तथा उसके स्वस्थ बीज की उपलब्धता आने वाले समय में सुनिश्चित करना होगा। गन्ने की अधिक उपज देने वाली किस्म विकसित की जाए साथ ही उन किस्मों को कम उपज देने वाली किस्मों से बदला जाए। इस दिशा में गन्ना प्रजनकों का अहम योगदान होगा तथा यह सम्मेलन इसमें मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा प्रदेश में गन्ना एवं चीनी उत्पादन बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों जैसे गन्ना बीज ग्राम, किसान क्लब, नाली विधि से बुवाई

क्षेत्रीय गन्ना प्रजनन सम्मेलन में मौजूद अतिथिगण

तथा गन्ने के साथ सह-फसलों को बढ़ावा देने जैसे कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला।

डॉ एडी पाठक, निदेशक भाकृअनुप भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने अपने प्रस्तुतीकरण में बताया कि किस प्रकार आईआईएसआर उत्तर प्रदेश और बिहार के किसानों के लिए अनुसंधान और विकास का कार्य कर रहा है, जिससे वहां पर चीनी परता, गन्ना उत्पादन एवं फसल विविधता में बढ़ोत्तरी हुई है। बिहार में बीज उत्पादन के कार्यक्रम के सफलता पर बोलते हुए डॉ पाठक ने बताया कि इससे उपज में 10 टन हेक्टेयर तथा चीनी परता में 0.5 तक की वृद्धि हुई है और वहां के किसानों की आय बढ़ी है। डॉ आरके सिंह सहायक महानिदेशक वाणिज्यिक फसल भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने गन्ना और चीनी के राष्ट्रीय मांग पर विचार रखे और कहा कि इससे जुड़े सभी लोग इस दिशा में सोचें। संस्थान के मीडिया प्रभारी डॉ एके साह ने बताया कि भविष्य में संस्थान तथा गन्ना विकास विभाग मिलकर राज्य में गन्ना तकनीकों का वृहत स्तर पर प्रग्रहण के लिए रणनीति बनाकर कार्यक्रम संचालित करेगा, जिससे यूपी में गन्ना किसानों की आय में आशातीत वृद्धि किया जा सके और आने वाले वर्षों में किसानों के आय को दुगुना करने में महत्वपूर्ण योगदान किया जा सके। डॉ एसके शुक्ला परियोजना समन्वयक गन्ना ने बताया कि इस सम्मेलन में विभिन्न केन्द्रों के गन्ना प्रजनन से जुड़े 50 से ज्यादा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं और तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ बख्शीराम निदेशक भाकृअनुप गन्ना प्रजनन संस्थान कोयंबटूर ने किया। सम्मेलन में उत्तर प्रदेश गन्ना विकास विभाग के संयुक्त गन्ना आयुक्त, उप गन्ना आयुक्त, अतिरिक्त गन्ना आयुक्त गन्ना विकास अधिकारियों ने भी भाग लिया। इस मौके पर गन्ने की किस्म को विकसित करने से संबन्धित तकनीकी कार्यक्रमों पर वैज्ञानिकों द्वारा चर्चा की गई। ***कासं.***

दैनिक जागरण लखनऊ, 24 जनवरी 2017

मांग पूरी करने को उन्नत किस्में विकसित करना जरूरी

- उप्र व बिहार के किसानों के लिए हो रहा अनुसंधान और विकास कार्य
- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित हुआ कार्यक्रम

जागरण संवाददाता, लखनऊ : देश में वर्ष 2030 तक चीनी की मांग बढ़कर 35 मिलियन टन होगी। इस मांग को पूरा करने के लिए 100 से 110 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उपज तथा 10 से 75 प्रतिशत चीनी परता का लक्ष्य प्राप्त करना होगा इसलिए जरूरी है कि उन्नत किस्मों का तेजी से विकास हो।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित क्षेत्रीय गन्ना प्रजनक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उक्त बात गन्ना आयुक्त विपिन कुमार द्विवेदी ने कही। उन्होंने कहा कि चीनी की मांग पूरी करने को उन्नत किस्में विकसित करना जरूरी है।

संस्थान के निदेशक डॉ.एडी पाठक ने बताया कि आइआइएसआर उत्तर प्रदेश और बिहार के किसानों के लिए अनुसंधान और विकास का कार्य कर रहा है जिससे वहां पर चीनी परता, गन्ना उत्पादन एवं फसल विविधता में बढ़ोत्तरी हुई है। बिहार में बीज उत्पादन कार्यक्रम की सफलता पर बोलते हुए डॉ.पाठक ने बताया की इससे उपज में 10 टन हेक्टेयर तथा चीनी परता में 0.5 फीसद तक की वृद्धि हुई है जिससे किसानों की आय बढ़ी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली डॉ.आर के सिंह ने गन्ना और चीनी के राष्ट्रीय मांग के बारे में जानकारी दी। सम्मेलन में 50 से ज्यादा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।